प्रस्तावना

तिलहन अनुसंधान निदेशायल में चार दिन (01 जनवरी से 04 जनवरी, 2014) का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया । यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कृषि तकनीकी प्रबंध संस्था, नवादा बिहार द्वारा प्रायोजित किया गया था । इसमें बिहार के नवादा जिले के 17 किसानों ने भाग लिया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को तिलहनी फसलो की जानकारों देना था । इस कार्यक्रम का मुख्य बिन्दु तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने के तकनीकी जानकारी दी गई । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नो तिलहनी फसलो (सूरजमुखी, अरण्डी, कुसुम या करड़ी, तिल, रामतिल, राई और सरसों, अलसी, सोयाबीन एवं मूँगफली) के बारें में प्रशिक्षण दिया गया । इसमें मुख्यत: फसल को उगाने के क्षेत्र, जलवायु, मृदा, खेत की तैयारी, बुआई केसे करे एवं कब करें, बुआई का समय, मौसम, बीजदर प्रति हैक्टर, बीज शोशन या बीजोपचार, बीज की गहराई, प्रजातियों का चयन, उर्वरक तथा खाद की मात्रा एवं समय, सिंचाई की क्रान्तिक अवस्थाएँ,खरपतवारो का नियंत्रण कैसे करे, पकने की अवधि, कौन-कौन से कीट लगते है एवं उनका नियंत्रण कैसे करें, फसल पर कौन-कौन से रोग लगते है एवं उनकी रोकथाम के उपाय (कृषि क्रियायें, रसायन विधि, जैविक विधि), फसल चक्र कैसे अपनाये एवं फसल चक्र के फायदे, फसल की कटाई कब एवं कैसे करें एवं मड़ाई कैसे करें पर विस्तार से चर्चा की गई । किसानों ने चर्चा में काफी रुचि दिखाई एवं कही सारे प्रश्न भी पूछे । इनके अलावा इक्रिसेट (ICRISAT), प्टनचेरू के आधे दिन का खेतो पर भ्रमण का कार्यक्रम भी रखा था । जिसमें डॉ.मुरली मनोहर शर्मा जी ने इक्रिसेट के बारे में किसानों को विस्तार से जानकारी दी । उन्होने यह बताया की यहॉ पर कौन-कौन सी फसल पर काम होता है । एवं उनकी नई प्रजातियॉ कौन-कौन सी हैं । तथा इसके अलावा उन्होने जल संरक्षण पर विशेष जोर दिया । तथा किसानों को बताया कि किस तरह से आप कम पानी वाले क्षेत्रों में भी बारिश के पानी से सिंचाई देकर कैसे अपने उत्पादन को बढ़ा सकते है । उन्होने किसानों को जल संरक्षण के फायदें भी बताये जिससे किसानों की जल संरक्षण में रुचि बढ़े । किसानो ने तिलहन अनुसंधान निदेशालय के राजेन्द्रनगर स्थित फार्म पर जाकर तिलहनी फसले के बारे में विस्तार से जानकारी ली । किसानों को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से काफी सिखने को मिला जिसमें मधुमक्खी पालन भी मुख्य था । उन्होने मधुमक्खी पालन का महत्व समझा एवं किस तरह बिना किसी ज्यादा लागत के खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन कर सकते है । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान किसानों ने कुसुम, सूरजमुखी एवं अरण्ड़ी में ज्यादा रुचि दिखाई जिसके चलते सभी किसानों को कुसुम का बीज (200-250 ग्राम) उपलब्ध करवाया । इसके अलावा सूरजमुखी एवं अरण्ड़ी का बीज की किसानों को दिया गया । इसके अलावा किसानों को हिन्दी में जानकारी के लिए सभी नो तिलहनी फसलों

की जानकारी के लिए इस हिंदी पुस्तिका दी गई । ताकि वो भविष्य में किसी भी फसल के बारे में पुरी जानकारी पा सकें । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने में परियोजना निदेशक महोदय डॉ. के.एस. वराप्रसाद, डॉ. जी.डी. सतीस कुमार, डॉ. प्रद्युम्न, डॉ.हरिप्रकाश मीणा, डॉ.हरवीर सिंह, डॉ. अजिज कुरेशी, डॉ. एन. मुक्ता, डॉ. पदमावती, डॉ. जवाहर लाल एवं कृषि प्रसार के सभी कर्मचारियों का मुख्य योगदान रहा ।

दिनांक: 05.01.2014

(डॉ.एम. पद्मय्या)

प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख सामाजिक विज्ञान अनुभाग